दिगंत-भाग-2 उपशास्त्री - अ०द्वि०-पत्र
शीर्षक - "हँसते हुए मेरा अकेलापन" राष्ट्रभाषा हिन्दी
लेखक - मलयज दिगंत-भाग-2
गद्य खण्ड

लघु उत्तरीय प्रश्नोंतर-

1. प्रश्न:- डायरी क्या है?

उत्तर:- डायरी दैनिक वृत्त की पुस्तक है। इसमें जीवन के प्रतिदिन की घटनाओं और अनुभवों का वर्णन होता है। किसी व्यक्ति की डायरी से उसके मन के भाव, उसके जीवन के लक्ष्य, जीवन की स्थितियाँ परिलक्षित होती हैं। डायरी किसी के जीवन का दर्पण है।

2. प्रश्न:- डायरी का लिखा जाना क्यों मुश्किल है?

उत्तर:- डायरी लिखा जाना एक कठिन कार्य है। यह वही व्यक्ति लिख सकता है जो नियमित और संयमित जीवन जीता है। आलसी, लापरवाह, लक्ष्यविहीन व्यक्ति डायरी नहीं लिख सकता है। इसलिये यह मुश्किल काम है। पूरी मानसिक तटस्थता से ही यह कार्य संपादित होता है।

3. प्रश्न:- डायरी के इन अंशों में मलयज की गहरी संवेदना घुली हुई है। इसे प्रमाणित करें।

उत्तर:- लेखक मलयज द्वारा लिखित डायरी के अंश 'हँसते हुए-मेरा अकेलापन' के अंशों में लेखक की गहरी संवेदना घुली हुई है। लेखक ने इन अंशों में अपने समय की उथल-पुथल और अपने निजी जीवन की बेचैनियों का स्पष्ट चित्रण किया है।

इनकी डायरी में मानव जीवन की जटिलता वर्णित है। लेखक की इस डायरी से स्पष्ट होता है कि वे बड़े ही संवेदनशील थे। लेखक का कहना है कि साहित्य लिखने और साहित्यकार बनने के लिए लेखन से पहले सावधान और स्वाधीन होना जरूरी है।

शेष आगे-

Page No.:
Date: / /

डायरी के प्रथम अंश में लेखक प्रकृति के प्रति काफी संवेदनशील है। अपने आस-पास के वृक्षों, उनकी प्राकृतिक छटा, पेड़ो की निश्चित संख्या देख लेखक भावुक हो जाता है।

डायरी के दूसरे अंश में लेखक जीवन रूपी फसल का चित्रण कर पाठकों को इतना ~~सं~~ संवेदनशील बना देते हैं कि वे सोचने के लिए बाध्य हो जाते हैं कि मानव-जीवन में कितने धोखे एव फरेब है। इसलिये लेखक का कहना है कि जीवन के मार्ग दुर्गम है।

इसी प्रकार पाँचवें अंश में लेखक एक फल बेचने वाली किशोरी से इतना प्रभावित हो जाता है कि उसे सेव और किशोरी में कोई अन्तर दिखाई नहीं पड़ता है। वे भाव विह्वल हो जाता है।

इस प्रकार लेखक की डायरी के सभी अंशों में लेखक की गहरी संवेदना घुली हुई है।

डॉ० देव चरण प्रसाद [redacted]
एसो० प्रो० हिन्दी 29-04-21
रा०उ०सं०महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

निबंध माला

शीर्षक - महा-मानव - सागर-तीरे,

लेखक - डॉ० रमाकान्त पाठक

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर -

प्रश्न :- 'महा-मानव-सागर-तीरे' किस प्रकार का निबंध है?

उत्तर निबंधकार डॉ० रमाकान्त पाठक द्वारा लिखित निबन्ध 'महा-मानव-सागर-तीरे' एक विचारात्मक निबंध है। इस लेख में विद्वान निबंधकार के सम्पूर्ण भारत के प्रसंग में बंगाल की महिमा का गौरवपूर्ण मूल्यांकन किया गया है।

प्रश्न :- लेखक बंगाल को देश का एक छोटा प्रतिरूप क्यों मानता है?

उत्तर :- निबंधकार का कहना है कि बंगाल यद्यपि भारत का एक प्रान्त है, तथापि इसे देश का एक छोटा प्रतिरूप कहा जा सकता है। आदिकाल से ही हमारे प्राचीन ग्रंथों में इसकी महिमा का उल्लेख है। इसके पावन तीर्थ गंगा-सागर को देखकर ही जहाँ व्यास जी ने गीता की 'स्थित-प्रज्ञता' की कल्पना की होगी। महासागर एवं हिमालय की उत्तुंग चोटियों को देखकर ही महर्षि वाल्मीकि ने भगवान राम का स्वरूप निर्धारित किया होगा। हिन्दुस्तान को छोटे रूप में देखना हो तो एक बार अवश्य बंगाल की राजधानी में प्रवेश करना चाहिए। बंग सागर में मिलने के लिए ही गंगा हिमालय से निकल धरती पर आयी है। ऐसे ही तथ्यों के आधार पर लेखक बंगाल को देश का एक छोटा प्रतिरूप मानता है।

प्रश्न :- बंगाल सदैव से ही राष्ट्र का गौरव रहा है कैसे?

उत्तर :- बंगाल सदैव से ही भारतीय मेधा, हिन्दुस्तानी संस्कृति, राष्ट्र के गौरव और तेज बल का प्रतीक रहा है। इसके विवेक एवं दूरदृष्टि का कोई जोड़ नहीं है। किसी जमाने में हमारे पूर्वजों ने भारतीयों को समुद्र पार किया तो सेतु बंध जैसे महातीर्थ की स्थापना कर लंका में विजय पताका फहराई गयी थी बंगाल की भूमि रवीन्द्र नाथ टैगोर, सुभाष चन्द्र बोस, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर —

शेष आगे -

रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द जैसे सपूतों की मातृभूमि है। यह वैसे लोगों की धरती है जहाँ के महामानव प्रताड़ना की अग्नि पीकर अंग्रेजों के अत्याचार का कालकूट पान कर साक्षात शंकर बन गए हैं। इन्हीं सब तथ्यों के आधार पर लेखक बंगाल को राष्ट्र का गौरव मानता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद [redacted]
एसो० प्रो० हिन्दी 29-04-21
रा० कु० सिं० महा वि० सुरकसेना, पूर्णियाँ

2020 वर्षीय परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या-

जयद्रथ-वध शास्त्री प्रथम खण्ड - अनिवार्य द्वितीय-पत्र.
कवि - मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रभाषा हिन्दी

"प्रियमृत्यु का अप्रिय महासंवाद पाकर विष भरा,
चित्रस्थ-सी निर्जीव मानो रह गई हत उत्तरा।
संज्ञा-रहित तत्काल ही फिर वह धरा पर गिर पड़ी,
उस काल मूर्च्छा भी अहो! हितकर हुई उसको बड़ी॥"

उत्तर:-

सन्दर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक जयद्रथ-वध खण्ड काव्य के द्वितीय सर्ग से उद्धृत है। इसके रचयिता राष्ट्रवादी कवि मैथिलीशरण गुप्त जी हैं। अभिमन्यु की मृत्यु का संवाद पांडवों के शिविर में पहुँचा तो वे सभी शोक में डूब गये। इसके बाद वह संवाद अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा के पास भी पहुँचा। वह इस समाचार को जानकर चक सी रह गई।

व्याख्या- कवि का कहना है कि उत्तरा अपने प्राणप्रिये की मृत्यु का बुरा जहरीला समाचार पाकर चक सी रह गई। वह चित्र की मूर्ति के समान हो गई अर्थात मानो वह बिना जीव की हो गई। चेतनाहीन उत्तरा तत्काल ही पृथ्वी पर गिर पड़ी। उस समय मानो बेहोशी भी उसके लिए बड़ी भलाई करने वाली हुई।

विशेष- उपर्युक्त पंक्तियों में उत्तरा के चक से रह जाने का बड़ा सजीव वर्णन कवि द्वारा हुआ है। चित्रस्थ, निर्जीव, संज्ञा रहित शब्दों का प्रयोग कर कवि ने उसका साकार चित्र उभार दिया है।

'मूर्च्छा' को भी कवि ने हितकर इसलिए कहा है कि यदि वह चेतना युक्त होती तो रोती-चीखती किन्तु मूर्छित हो जाने पर वह दुःख से भी मुक्त हो गई। कवि मैथिलीशरण गुप्त ने प्रस्तुत पँक्तियों के माध्यम से अपने प्राण प्रिये के दुःखद समाचार सुनकर उत्तरा

शेष आगे

के विलाप का सजीव चित्रण किया है। पाठक भी करुणा से भर जाते हैं।

प्रस्तुत पद में उपमा, अनुप्रास अलंकार की छटा विद्यमान है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
[redacted]
एसो० प्रो० हिन्दी 29-04-21
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ